मिल गई मंज़िल मुझे

● ब्रह्माकुमारी सुष्मिता, ढाका, बांग्लादेश

जीवन के इस सफर में हर मानव-मन में कुछ करने की, कुछ पाने की इच्छा जागृत होती रहती है। यूँ भी कह सकते हैं कि सबके मन में बड़े प्यार से एक सपना संजोया हुआ होता है। परन्तु, ज़रूरी नहीं कि सबके सपने सच हो जायें। कुछ लोगों के सपने सहज ही साकार हो जाते हैं, कुछ लोग सपनों को साकार करने में काफी मेहनत करते हैं और कुछ लोगों की तो तमाम उम्र ही बीत जाती है सपनों को साकार करने में। कइयों के सपने तो सपने ही बनकर रह जाते हैं। वे लोग खुशनसीब होते हैं जिनके सपने पूर्ण रूप से एवं मनचाहे रूप से साकार होते हैं।

अनजानी कशिश
प्रभु के प्रति

मैं अपने को संसार की उन खुशनसीब आत्माओं में से एक समझती हूँ जिनके सपने साकार हो गये। बचपन में एक बार मीरा की कहानी सुनी थी, तब से ही मन में मानो मीरा की छवि छप गई थी। एक अनजानी कशिश, एक अनदेखा खिंचाव हमेशा ही प्रभु के प्रति मन में रहता था। उस अनदेखे, अनजाने ईश्वर के प्रति मेरे मन में बचपन से ही एक रिश्ता पनपने लगा था। जब-जब कोई ईश्वर के बारे में कुछ कहता था तो मेरा बावला मन उसे सहज ही स्वीकार कर लेता था।

मन शांत रहने लगा

माँ-बाप की इकलौती बेटी हूँ। बड़े लाड़-प्यार से परवरिश हुई है। माँ-बाप जब भी मेरी शादी की बात करते, मन अनजाने खौफ़ से भर जाता। सन् 2009 में पहली बार अपनी मौसी के साथ ब्रह्माकुमारी आश्रम में आने का सुअवसर मिला। बहनों ने मुझे कोर्स कराया। जैसे-जैसे ईश्वरीय ज्ञान सुनती गई वैसे-वैसे मन के अंदर छिपे काफी सवाल हल होने लगे। ज्ञान काफी अच्छा लगने लगा। पहले बहुत चिड़चिड़ी रहती थी, बात-बात पर क्रोध आता था परन्तु ज्ञान सुनने और योग का अभ्यास करने से मेरा मन शांत रहने लगा। एक बार आश्रम में बहनजी ने कर्मणा सेवा करने का आग्रह किया और मैं तैयार हो गई। तब पूरा दिन मैं आश्रम में रही, सेवा की और भोजन आदि सब आश्रम में ही किया। मुझे इतना आनन्द मिला कि मैं सुध-बुध खो बैठी। न ही अपने घर जाने का ख्याल आया और न ही घर की याद आई। ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं अपने असली घर में ही हूँ। फिर तो दिन-प्रतिदिन आश्रम के प्रति मेरा खिंचाव अधिक बढ़ने लगा। जब भी सेवा का

मौका मिलता, मैं आश्रम में रहने चली आती। यहाँ की शान्ति को छोड़कर वापस जाने का बिल्कुल ही मन नहीं करता था।

चिन्ता मत कर, मैं बैठा हूँ

माता-पिता को जैसे ही मेरे आश्रम में जाने की बात मालूम पड़ी तो उन्होंने पाबन्दी लगा दी और क्रोध में आकर मेरी शादी करने का फैसला कर लिया। मैं बहुत दु:खी हो गई और बाबा के कमरे में बैठ कर रोने लगी। बाबा से कहा, बाबा, अब आप ही मेरी मदद कर सकते हैं, कृपया बाबा आप ही कुछ कीजिये। अचानक मुझे महसूस हुआ कि बाबा कह रहे हैं, ''बच्चे, तू चिन्ता मत कर, मैं बैठा हूँ।'' उन्हीं दिनों बी.ए. फाइनल ईयर की परीक्षा के बाद मैं आश्रम में आ गई और पूरा दिन बाबा के कमरे में बैठी बाबा से बातें करती रही कि बाबा आप मुझे नसीब से मिल गये हो, अब मैं आपको किसी भी कीमत पर खोना

नहीं चाहती हूँ। चाहे जो हो जाये मगर मैं आपका हाथ और साथ कभी नहीं छोड़ूँगी। कितने ही विघ्न आयें उनका मुकाबला करूँगी।

सोच-विचार कर लिया था फैसला

मैंने आश्रम पर रहकर जन-जन की सेवा करने कर फैसला ले लिया था। यह फैसला अच्छी तरह सोच-विचार के बाद और अपनी दिव्य अनुभूतियों के आधार पर लिया था। मेरे सामने भौतिक संसार की चकाचौंध का मार्ग खुला था, मैं उसमें बिना किसी रोक-टोक के जा सकती थी परन्तु अंतरात्मा की बार-बार यही पुकार थी कि तुम्हें भगवान का बनना है, संसार को शान्ति का मार्ग दिखाना है, भोगों में डूबकर जीवन को नष्ट नहीं करना है, योग द्वारा जीवन को महान बनाना है। अन्तरात्मा की आवाज़ को दबाकर जीना तो मुर्दे का जीवन है अत: सब विरोधों का सामना करके भी मुझे आत्मतृप्ति के लिए और विश्व-सेवा के लिए इस फैसले पर अडिग रहना था।

पुलिस और वकील का सामना

दो दिन के बाद मेरे पिताजी पुलिस और वकील को साथ लेकर सेन्टर पर आ गये। उन्होंने सेन्टर की बहन जी को डराया और धमकाया। पिताजी ने बहन जी पर मुकदमा करने का फैसला कर लिया। यह जान कर मुझे बहुत अफ़सोस हुआ। मैंने बाबा से कहा, बाबा, आपने मेरी मदद करने का वादा किया था पर यह क्या, आपने तो बहन जी को मुसीबत में डाल दिया, मेरे कारण उन्हें तकलीफ़ उठानी पड़ेगी। बाबा मुस्करा रहे थे और उसी अंदाज़ में मुझे कह रहे थे, ''बच्चे, तू चिन्ता मत कर, मैं बैठा हूँ।'' बहनजी ने पुलिस वाले भाई को और वकील भाई को समझाया कि देखो यह ईश्वरीय परिवार है। यहाँ हम सब एक परिवार की तरह रहते हैं। हम सब ने स्वेच्छा से अपना जीवन ईश्वरीय सेवा एवं मानव सेवा अर्थ समर्पण किया है। हम पवित्र रह कर इस विश्व को परिवर्तन करने में उस परमपिता परमात्मा की मदद करना चाहते हैं तो इसमें बुराई क्या है और यदि सुष्मिता बहन स्वेच्छा से ईश्वरीय कार्य में अपना जीवन समर्पण करना चाहती है तो आप क्यों उसे इज़ाजत नहीं दे रहे हैं। वो बालिग है और उसे अपना जीवन, अपने तरीके से जीने का हक है, फिर आप सबको क्या असुविधा है।

बहुत अच्छी संस्था है

बहनजी ने बड़े प्यार से समझाया तो चमत्कार-सा हो गया। मुझे महसूस हुआ मानो बाबा ने यह चमत्कार कर दिखाया है। वकील ने पुलिस वालों से कहा, लड़की 18 साल से बड़ी है अत: कानूनन हम उसके साथ ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं कर सकते। अगर वह अपनी इच्छा से यहाँ रहना चाहती है तो हम उसे रोक नहीं सकते, वैसे मैं इस संस्था को जानता हूँ, यह बहुत अच्छी संस्था है। माता-पिता मेरी लगन को देख कर चले गये और इस तरह मुझे बाबा के घर में रहने का सौभाग्य मिला। मैं यहाँ बहुत प्रसन्न हूँ और यहाँ रहकर मेरी खूब आध्यात्मिक उन्नति हो रही है। अब तो दिल बार-बार बाबा का शुक्रिया अदा करता है। मेरी खुशी का तो मानो ठिकाना ही नहीं है।

❖

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी

नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है।

सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है। अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें:

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान।

मो.: 09413240131 **फोन:** (02974) 238347/48/49

वेबसाइट: www.ghrc-abu.com **फैक्स:** (02974) 238570

ई-मेल:drmurlidharsharma@gmail.com